International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2021; 3(1): 278-281
Received: 18-01-2021
Accepted: 22-03-2021

सन्नी शुक्ला
शोधार्थी, दीन दयाल उपाध्याय पीठ,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सन्नी शुक्ला
शोधार्थी, दीन दयाल उपाध्याय पीठ,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
हिमाचल प्रदेश, भारत

पत्रकारिता और दीन दयाल उपाध्याय

सन्नी शुक्ला

सार
पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने अपने जीवन काल में कई नए आयाम स्थापित किए और हर क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका निभाई। वे एक कुशल संगठनकर्ता के साथ–साथ अच्छे पत्रकार और संचारक भी थे। पत्रों का संपादन, प्रकाशन, स्तंभ लेखन, पुस्तक लेखन उनकी रूचि का विषय था। जिसे उन्होंने अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए प्रयोग किया। उन्होंने लिखने के साथ–साथ बोलकर भी एक प्रभावी संचारक की भूमिका का निर्वहन किया है। एक पत्रकार के तौर पर दीन दयाल उपाध्याय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में नया आयाम स्थापित करते हुए यह बतलाया कि जीवन मूल्यों की जितनी जरूरत मनुष्य को है, उतनी ही मीडिया को भी है। यह संभव नहीं है कि समाज तो मूल्यों के आधार पर चलने को आग्रही हो और उसका मीडिया, फिल्में, प्रदर्शन कलाएं, पत्रकारिता नकारात्मकता का प्रचार कर रही हों। समाज और मनुष्य को प्रभावित करने का सबसे प्रभावी माध्यम होने के नाते हम इन्हें ऐसे नहीं छोड़ सकते। इन्हें भी हमें अपने जीवन मूल्यों के साथ जोड़ना होगा, जो मनुष्यता और मानवता के विस्तार का ही रूप हैं। अगर हम ऐसा मीडिया खड़ा कर पाते हैं तो समाज के बहुत सारे संकट स्वयं ही दूर हो जाएंगे। फिर टीवी बहसों से निष्कर्ष निकलेंगे और खबरें डराने के बजाए जीने का हौंसला देंगी। खबरों का संचार ज्यादा व्यापक होगा तथा जिंदगी के हर पक्ष का विचार करेंगी। वे एकांगी नहीं होंगी, पूर्ण होंगी और शुभत्ता के भाव से भरी पूरी होंगी। यहां किसी धार्मिक और आध्यात्मिक मीडिया की बात नहीं हो रही है बल्कि सिर्फ उस दृष्टि की बात हो रही है जो 'एकात्म मानवदर्शन' हमें देता है। सबको साथ लेकर चलने, सबका विकास करने और सबसे कमजोर का सबसे पहले विचार करने की बात है। जहां दुनिया को बनाने वाले सारे अवयव एक–दूसरे से जुड़े हैं। जहां सब मिलकर संयुक्त होते हैं और 'वसुधा' को 'परिवार' समझने की दृष्टि देते हैं। दीन दयाल उपाध्याय की समृतियां और उनके द्वारा प्रतिपादित विचारदर्शन एक सपना भी है तो भी इस जमीं को सुंदर बनाने की आकांक्षा से लबरेज है। उसकी अखंड मंडलाकार रचना का विचार करें तो मनुष्यता खुद अपने उत्कर्ष पर स्थापित होती हुई दिखती है। इसके बाद उसका समाज और फिल्में, मीडिया, मूल्य, राह और उसका मन सब एक हो जाते हैं। एकात्म सृष्टि, व्यक्ति, परिवेश से जब हम एक हो जाते हैं तो प्रश्नों के बजाए सिर्फ उत्तर नजर आते हैं और समस्याओं के बजाए समाधान नजर आते हैं। संकटों के बजाए उत्थान नजर आने लगता है। दुनिया 'एकात्म मानवदर्शन' की राह पर आ रही है। अपने भौतिक उत्थान के साथ आध्यात्मिकता को संयुक्त करने के लिए वह आगे बढ़ चुकी है। क्या हम धरती पर स्वर्ग उतारने के सपने को अपनी ही जिंदगी में सच होते देखना चाहते हैं तो इस विचार दर्शन को पढ़कर और समझते हुए जीवन में उतार कर देखना होगा। यह हमें इसलिए करना है क्योंकि हमारा जन्म भारत की भूमि पर हुआ है और जिसके पास पीड़ित मानवता को राह दिखाने का स्वभाविक दायित्व सदियों से आता रहा है।

कुटशब्दः पंडित, मीडिया, भाषा, पत्रकारिता, राष्ट्रीय

प्रस्तावना
पंडित दीन दयाल उपाध्याय का व्यक्तित्त्व बहुआयामी था। वे समाज के विषयों में हस्तक्षेप करने के लिए कई तरीकों से समाज के बीच अपने विचारों को रखते थे। सामाजिक विचारक के तौर पर या फिर अर्थशास्त्री, शिक्षाविद की भूमिका हो उन्होंने बतौर राजनेता या वक्ता, लेखक और पत्रकार हर भूमिका में समाज को एक नई दिशा देने की कोशिश की। उनकी स्मृति को रेखांकित करते हुए क्या हम विचार कर सकते हैं कि समाज जीवन के हर पक्ष में 'एकात्म मानवदर्शन' किस तरह से प्रभावी हो सकता है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति और समाज को एक ऐसा वैकल्पिक विचार और दर्शन प्रदान किया, जिससे प्रेरणा लेकर हजारों युवाओं की ऐसी मालिका तैयार हुई, जिसने इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भारतीय राजसत्ता में अपनी गहरी पैठ बना ली है। क्या विचार सच में इतने ताकतवर होते हैं या यह सिर्फ समय का खेल है? किसी भी देश की राजनीतिक निष्ठाएं एकाएक नहीं बदलतीं उसे बदलने में सालों लगते हैं। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और दीन दयाल उपाध्याय से लेकर श्री नरेंद्र मोदी तक पहुंची यह राजनीतिक विचार यात्रा साधारण नहीं है। इसमें इस विचार को समर्पित लाखों–लाखों अनाम सहयोगियों को भुलाया तो जा सकता है किंतु उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। पत्रकारिता के क्षेत्र में पंडित जी की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने उस दौर में पत्रकारिता को अपनाया जब पत्रकारिता 'मिशन' हुआ करती थी। उसे जीवन यापन के जरिए से ज्यादा समाज में नई अलख जगाने के लिए जाना जाता था। खासकर स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की राह चुनना बेहद मुश्किल फैसला माना जाता था।

लेकिन दीन दयाल उपाध्याय के मन में कोई दुविधा नहीं थी। वे जानते थे कि देश को आजाद करवाने में पत्रकारिता की भूमिका और नए भारत के निर्माण में अपने विचारों को लेखन के माध्यम से जनता के बीच ले जाना होगा।

प्रसिद्धि और श्रेय

पंडित दीन दयाल उपाध्याय की पत्रकारिता का अध्ययन करने से पहले हमें एक तथ्य ध्यान में अवश्य रखना चाहिए कि वह राष्ट्रीय विचार की पत्रकारिता के पुरोधा अवश्य थे लेकिन कभी भी 'संपादक' या 'संवाददाता' की भूमिका में नहीं रहे। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मूर्धन्य विचारक थे और अपने कार्यकर्ताओं के लिए उस संगठन का मंत्र है कि कार्यकर्ता को 'प्रसिद्धि परांगमुख' होना चाहिए अर्थात 'प्रसिद्धि और श्रेय' से बचना चाहिए। प्रसिद्धि और श्रेय 'अहंकार' का कारण बन सकता है और समाज जीवन में अहंकार ध्येय से भटकाता है। अपने संगठन के इस मंत्र को पंडित दीन दयाल उपाध्याय नें अजन्म गांठ में बांध लिया था। इसलिए उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाशित तो करवाया लेकिन उनके 'प्रधान संपादक' कभी नहीं बने। किंतु वास्तविक संचालक, संपादक और अवश्यकता होने पर उनके कम्पोजिटर, मशीनमैन, और सब कुछ दीन दयाल उपाध्याय ही थे। संचार की प्रभावी भूमिका को भली–भांति समझने वाले पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने जुलाई 1947 में लखनऊ से 'राष्ट्र धर्म' मासिक पत्रिका का प्रकाशन कर एक नई पत्रकारिता की नींव रखी और संपादक की जिम्मेदारी अटल बिहारी वाजपेयी और राजीव लोचन अग्निहोत्री को सौंपी। किंतु पत्रिका आरंभ करके स्वयं उससे हट नहीं गए बल्कि उसे स्थापित करने में अपना अहम योगदान देते रहे। 'राष्ट्र धर्म' को सशक्त करने और लोगों के बीच लोकप्रीय बनाने के लिए उन्होंने प्रायः उसके हर अंक में विचारोत्तेजक लेख लिखे। इस पत्रिका मे प्रकाशित होने वाली सामग्री का चयन भी दीन दयाल उपाध्याय स्वयं ही करते थे। इसी प्रकार मकर सक्रांति के पावन अवसर पर 14 जनवरी, 1948 को उन्होनें 'पांच्चजन्य' प्रारंभ कराया। राष्ट्रीय विचारों की प्रहरी 'पांच्चजन्य' में भी उन्होंने संपादक का दायित्व नहीं संभाला। इसके संपादक का दायित्व उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी को ही सौंपा। दीन दयाल उपाध्याय स्वयं 'विचारविथी' स्तंभ लिखते थे। जबकि अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित 'ऑर्गेनाइजर' में वह 'पॉलिटिकल डायरी' के नाम से स्तंभ लिखते थे। इन स्तंभों में प्रकाशित सामग्री के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दीन दयाल उपाध्याय की तत्कालीन घटनाओं एवं परिस्थितियों पर गहरी पकड़ थी। उनके लेखन में तत्कालीन परिस्थितियों पर बेबाक टिप्पणी के अलावा राष्ट्र जीवन की दिशा दिखाने वाला विचार भी समाविष्ट होता था। आजादी के बाद जब देश को साम्यवादी–समाजवादी ढांचे की ओर ले जाया जा रहा था तब दीन दयाल उपाध्याय ने सरकार को पश्चिम के अंधानुकरण से बचने की सलाह देते हुए भारत को अपनी संस्कृति के अनुरूप विकास का बुनियादी ढांचा तैयार करने का संदेश दिया था।

पत्रकारिता का धर्म

पांच्चजन्य, राष्ट्रधर्म, स्वदेश आदि पत्रिकाओं को गति देने में पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पत्रों ने कुछ ही महीनों में लोगों के बीच अपनी अलग पहचान बना ली। इनमें प्रकाशित ज्वलंत लेखों ने जनसाधारण के अंर्तमन को हिलाकर रख दिया। सरल हृदय दीन दयाल जी ने इसका श्रेय अपने सहयोगियों को देते हुए कहा था, 'इस सफलता के पीछे किसी एक व्यक्ति का योगदान नहीं है, अपितु इसे प्राप्त करने के लिए प्रकाशन से जुड़े एक–एक व्यक्ति ने, चाहे वह किसी भी पद पर कार्य कर रहा हो, हवन–कुंड में जलने वाली समिधा के समान स्वयं को दग्ध किया है। उनके अमूल्य सहयोग, अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प का ही परिणाम है कि राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड से प्रकाशित होने वाले तीनों पत्र इतने बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा स्वीकृत किए गए।' [1] दीन दयाल उपाध्याय द्वारा यहां टीम भावना को प्रदर्शित करते हुए सफलता का श्रेय इस कार्य में जुड़े हुए हर व्यक्ति को दिया, जिसमें उनका योगदान रहा। अपने सहयोगियों की हौंसला वृद्धि करने मे उनका यह कथन बहुत सहायक रहा। आदर्श पत्रकार होने के नाते कभी किसी के खिलाफ कटु शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। शब्द की शालीनता और वाणी का संयम, यह पत्रकारिता के धर्म में यदि किसी ने निभाया तो वे पंडित दीन दयाल उपाध्याय थे। एक घटना जो दीन दयाल उपाध्याय की पत्रकारिता में अनुशासन तथा भाषा के उपयोग का बोध करवाती है उसका वर्णन करना यहां अवश्यक है। जुलाई 1953 को पांच्चजन्य ने एक 'अर्थ अंक' निकाला। आर्थिक विषयों पर बहुत सामग्री एकत्र कर अच्छी मेहनत के साथ यह अंक तैयार किया गया था। संपादक महेंद्र कुलश्रेष्ठ को उन्होंने अंक की समीक्षा लिख कर भेजी। उनका आग्रह था कि सामग्री चयन में निष्पक्षता व पूर्णता रहनी चाहिए। अतः उन्होंने लिखा, 'पंचवर्षीय योजना में श्री रणदिवे की आलोचना को क्यों स्थान दिया गया ? जबकि अन्य दलों की आलोचना का समावेश नहीं है। पत्रकारिता में शिष्टाचार की अवहेलना नहीं होनी चाहिए। संपादकीय में श्री अशोक मेहता की शासन के साथ सहयोग की नीति की आलोचना करते हुए 'मूर्खतापूर्ण' शब्द के स्थान पर यदि किसी सौम्य शब्द का प्रयोग होता तो वह पांच्चजन्य की प्रतिष्ठा के अनुरूप होता।' [2] इस तरह पंडित जी का भाषा का इस्तेमाल किस तरह से सार्वजनिक रूप में करना चाहिए इसका विशेष ध्यान रखा जाता था।

समर्पण और मिशनरी भावना

समर्पण और मिशनरी भावना उनके व्यक्तित्व में इस प्रकार झलकती थी कि उन्होंने पत्रकारिता को कभी भी व्यवसाय के रूप में नहीं लिया। बतौर पत्रकार वे सबकी नजर में तब आए जब लखनऊ से 1947 मे 'राष्ट्र धर्म' का प्रकाशन शुरू हुआ। राष्ट्रधर्म के जरिए देश की चेतना में 'राष्ट्रवाद' के विचारों को मजबूत करने की सिफारिश हुई। भारत बंटवारे के बाद उन्हें इस मासिक पत्रिका के प्रकाशन की जिम्मबारी सौंपी गई। राष्ट्रधर्म में पंडित दीन दयाल उपाध्याय का नाम बतौर संपादक तो नहीं छपता था लेकिन हर कोई राष्ट्रवाद पर उनकी धार–धार लेखनी और विचारों की छाप आसानी से देख सकता था। उन्होंने उस दौर मे उसी सामग्री को छापने का फैसला लिया, जिसमें सकारात्मक पहलू हों। वे अपनी विचारधारा की आलोचना से कभी परहेज नहीं करते थे, उनका मानना था कि अगर भाषा संयमित और स्वस्थ आलोचना हो तो विरोधी पक्ष को भी सुना जाना चाहिए। पंडित जी के पास पत्रकारिता की कोई औपचारिक पढ़ाई और अनुभव नहीं था लिहाजा उन्होंने 'राष्ट्रधर्म' से ही पत्रकारिता और संपादन के गुर न केवल सीखे बल्कि उस दौर के कई महत्त्वपूर्ण लोगों को प्रेरणा भी दी। बाद में साप्ताहिक 'पांच्चजन्य' और दैनिक 'स्वदेश' भी छपने लगे। अटल बिहारी वाजपेयी पत्रकारिता के शुरूआती दौर से ही पंडित जी के साथ सहयोगी के रूप में मिले और शुरूआती दौर में काफी कुछ सीखा। इसके बाद पंडित दीन दयाल उपाध्याय राजनीतिक क्षेत्र में चले गए पर उन्होंने अपने लेखों से जनता से संवाद बनाए रखा। उनके लेखों के अध्ययन के पश्चात् यह बोध होता है कि उन्होंने अपनी बात को हमेशा बहुत आग्रह–पूर्वक और दृढ़ता के साथ रखा और कभी भी उसमें अक्रामक शैली का भाव देखने को नहीं मिलता था। उनके लेखों को पढ़कर यह साफ तौर पर समझा जा सकता है कि नेहरू काल की नीतियों के प्रखर आलोचक होने के बावजूद उनकी भाषा में उच्च–कोटि का संयम और संतुलन रहता था। खबर को विकृति के स्तर पर नहीं ले जाने के लिए वो पुरजोर

वकालत करते और यही उनका मंत्र भी था। भानुप्रताप शुक्ल जो कि 'पांच्चजन्य' के साथ जुड़े अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि 'पांच्चजन्य' से उनके संबंध दिखते नहीं थे। हम लोग अनुभव करते थे कि उनका सन्निधय बड़ा मृदु एवं शिक्षाप्रद है। वे आते थे और उनसे पत्रकारिता पर चर्चा होती थी। न्यूज कैसे बनाना, शीर्षक कैसे लगाना आदि से लेकर छोटी–बड़ी सब सैद्धांतिक बातें होती थी। हम उनसे बहस भी करते थे। इस संबंध में शुक्ल जी एक घटना का वर्णन करते हुए बताते हैं, 'एक बार दीन दयाल जी लखनऊ आए। तब संत फतेह सिंह किसी विषय पर आमरण अनशन कर रहे थे। हमने 'पांच्चजन्य' में शीर्षक दिया था, 'अकाल तख्त के काल।' उन्होंने यह शीर्षक हटवा दिया तथा समझाया, सार्वजनिक जीवन में इस प्रकार की भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए। जिससे परस्पर कटुता बढ़कर आपसी चर्चा–विमर्श अथवा साथ काम करने की संभावनाएं ही समाप्त हो जाए। अपनी बात की दृढता से कहने का अर्थ कटुतापूर्वक कहना नहीं होना चाहिए।' [3] वो किसी व्यक्ति या विचारधारा के प्रति पूर्वाग्रह बनाकर चलने के खिलाफ थे। उन्होंने पत्रकारिता को कभी व्यवसाय के रूप में नहीं लिया बल्कि एक मिशन भाव से कार्य किया। 'पांच्चजन्य' की कंपोजिंग भी उन्होंने की और जब वितरक नहीं आया तो साईकिल पर 'पांच्चजन्य' के बंडल लेकर लखनऊ के चारबाग स्टेशन पर वितरण के लिए भी ले गए। दीन दयाल उपाध्याय के पत्रकारिता में आने के बाद कई लोगों को पत्रकारिता को मिशन बनाकर चलने की प्रेरणा मिली। दीन दयाल उपाध्याय समाजिक सरोकारों से भटकी हुई पत्रकारिता को बहुत खतरनाक मानते थे। उनकी सोच थी कि पत्रकारिता समाज का मार्गदर्शन करे और समाज के सामने नया विचार पेश करे। 'आर्गेनाईजर' के संपादक के. आर. मलकानी लिखते हैं, 'जब तीन दिनों से भी कम अवधि में हरियाणा, पश्चिम बंगाल तथा पंजाब की गैर कांग्रेसी सरकारें गिरा दी गईं तब हमने एक व्यंग्य चित्र छापा जिसमें चव्हाण लोकतंत्र के बैल को काटते हुए दर्शाए गए थे। बहुतों को लगा, यह कुछ अतिवाद है। पंडित जी की इस पर प्रतिक्रिया थी, 'चाहे व्यंग्य चित्र में ही क्यों न हो, गौ हत्या का यह दृश्य मन को धक्का पहुंचाने वाला है।' [4] पांच्चजन्य में उनके स्तम्भ विचार विथि में हमेशा उनका प्रयास एक नया और संतुलन विचार देने का रहा। अपने लेखों मे वे सरकार के प्रति नरम दृष्टिकोण कतई नहीं रखते लेकिन उनकी भाषा सौम्य रहती। उनकी बातों में सच्चाई, दृढ़ता का समावेश हमेशा बना रहता था। पत्रकार को केवल और केवल सत्य ही लिखना चाहिए लेकिन वो यह भी मानते थे कि कटु सत्य को सौम्य तरीके से ही लिखा जाए। समाचार चयन में कभी भी पक्षपात न हो और समाज का सही मार्गदर्शन किया जाए। वे सत्ता पक्ष की कमियों को उजागर अवश्य करते पर लिखते वक्त यह भी ध्यान रखते कि लिखते समय किसी का अनादर न करें या कटुत्ता की कोई भावना उनके लेखन मे न दिखे। वो पत्रकारिता को राजनेताओं के इर्द–गिर्द समेटने का भी विरोध करते थे। उनका मानना था कि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य, संस्कृति, धर्म से लेकर समाज के हर आयाम सम्माहित्त हों।

साहित्य और गौरवशाली इतिहास

भारत को आजाद हुए सात दशक से ज्यादा हो गए हैं। दीन दयाल उपाध्याय ने आजादी के वक्त और उसके तुरंत बाद जिस दौर में पत्रकारिता, साहित्य और राजनीति के जरिए समाज के जिस ताने–बाने को सामने रखा, वो आज भी प्रासंगिक है। दीन दयाल उपाध्याय नें पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों विचारों के विकल्प के रूप में 'एकात्म मानव दर्शन' रखा था। इनके दर्शन में समाजवाद, पूंजीवाद के बीच ऐसी राह का पक्ष है, जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो माजूद हों लेकिन उनके अतिरेक और अलगाववाद जैसी बातें न हों। भारतीय समाज की रचना को देखते हुए दीन दयाल उपाध्याय के इस सिद्धांत को आज के समाज में व्यवहारिक माना जा सकता है। भविष्य की महानता और परम वैभव का सपना ही ना जगे वरन् उस सपने को साकार करने का सार्मथ्य भी पैदा हो। लोकतांत्रिक पद्धति से समाज में ऐसा परिवर्तन आए कि जो कलुष, भ्रष्टाचार, कदाचार, अनाचार इस प्रकार की प्रवृति में संग्लन राजनीति करते हैं, ऐसी राजनीति का अंत हो। दीन दयाल उपाध्याय ने सत्ता के विरोध का रास्ता कभी नहीं छोड़ा लेकिन उनके विरोधी भी इस बात को महसूस करते थे कि जिस संतुलन और सौम्यता से दीन दयाल उपाध्याय आलोचना करते थे, वह उच्च कोटि की होने के साथ–साथ आत्म चिंतन करने को भी बाध्य करती थी। अपने साहित्य के जरिए उन्होंने भारत के गौरवशाली इतिहास को भी दुनिया के सामने रखा। उनकी सोच थी कि साहित्य के जरिए राष्ट्रीय सरोकारों को महत्व दिया जाए। 1946 में उन्होंने सम्राट चंद्रगुप्त के जीवन पर आधारित पुस्तक एक ही रात में लिख डाली और यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि इसका बाद में कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। इसी तरह जगत् गुरू शंकराचार्य पर आधारित पुस्तक अपनी रेल यात्रा के दौरान बेहद कम समय में लिख डाली। पंडित जी को पुस्तकों से बहुत लगाव था। उनका और पुस्तकों का साथ शरीर एवं आत्मा की तरह था। वे जहां भी जाते उनके पास कोई न कोई पुस्तक अवश्य रहती थी। दिन–भर व्यस्त रहने के बावजूद वे रात्रि को पुस्तक पड़ने का समय निकाल ही लेते। यदि यह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पुस्तक पढ़े बिना सो जाना उनके लिए भूखे–पेट सोने से अधिक कष्टदायक था। पुस्तकों के प्रति उनके इस लगाव का प्रारंभ उसी दिन हो गया था, जब उन्होंने प्राईमरी कक्षा में प्रवेश लिया था। वहां पुस्तकों के रूप में उन्हें एक ऐसा सच्चा मित्र मिला, जो जीवनपर्यंत उनके साथ रहा। देश की नीतियों और अर्थ जगत पर उनकी गहरी नजर थी। वो चाहते थे कि सत्ता पक्ष की हर नीति की मंजिल देश की अंतिम पंक्ति में खड़ा नागरिक हो। 'अंत्योदय' की यह सोच आज भी देश के नीति–नियंताओं के लिए प्रेरणादायी और प्रासंगिक है।

वर्तमान पत्रकारिता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे अगर बात की जाए तो पत्रकारिता के संदर्भ में जिन आदर्शो और मूल्यों की बात पंडित दीन दयाल उपाध्याय किया करते थे वो कहीं न कहीं आज लुप्त होते दिखाई देते हैं। आज की स्थिती में पत्रकारिता जगत 'मिशन' न होकर 'व्यवसाय' तक ही सीमित हो गया है। आज की पत्रकारिता 'राजनीति' की भेंट चढ़कर 'राजनेताओं' के इर्द–गिर्द घूमती हुई दिखाई देती है। पत्रकारिता का 'धर्म' समाज का सही मार्गदर्शन करना होता है परंतु वर्तमान समय में 'पीत पत्रकारिता' के रूप में व्यवसाय को आधार मानकर खबरों को दर्शाया जाता है। जिससे कि खबर की 'अहमियत' तथा 'विश्वास' दोनों ही लुप्त हुए दिखाई देते हैं। विज्ञापनों के माध्यम से विज्ञापनदाता द्वारा मीडिया में धन के सहारे विज्ञापन को खबर या न्यूज की तरह प्रकाशित या प्रसारित करवाया जाता है। जो कि अपनी विश्वसनियता को कहीं न कहीं खो देता है। समाज के जनजागरण में मीडिया बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। परंतु यह बात भी अवश्यक हो जाती है कि मीडिया अपनी जिम्मेबारियों का बोध करते हुए इसे 'मिशन' के रूप मे ले। पंडित जी एक राजनीतिज्ञ होने के नाते भी समाज से जुड़े रहने के लिए 'मीडिया' को एक अच्छा माध्यम मानते हैं। परंतु उस माध्यम का सही उपयोग किया जाना चाहिए जिससे कि समाज में भ्रम की स्थिती उत्पन्न न होकर समाज का सही मार्गदर्शन किया जा सके। वर्तमान समय में राजनीतिज्ञों द्वारा इस माध्यम का सही उपयोग किया जा रहा है इस संदर्भ में कोई संतोषजनक उत्तर आज मिलता है ऐसा नहीं कहा जा सकता। राजनेताओं द्वारा न्यूज चैनलों पर ही अमर्यादित भाषा का

उपयोग किया जाता है, जिससे कि समाज में भी तनाव का वातावरण बनता है। लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए मीडिया के क्षेत्र में आज के तकनीकी युग में बहुत से नए अविष्कार हो चुके हैं। जिसमें सोशल मीडिया प्रमुख है। परंतु नेताओं को जो समाज का नेतृत्व कर रहे होते हैं, यह ध्यान में रखना बहुत अवश्यक है कि अपनी बात को मर्यादित ढंग से लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करें। वहीं मीडिया क्षेत्र में काम करने वालों को भी यह अवश्यक हो चुका है कि वह अपनी भूमिका का सही निर्वहन करें। मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है तो यह स्वस्थ लोकतंत्र के लिए भी अवश्यक हो जाता है कि मीडिया कर्मी तथा राजनीतिज्ञ सभी अपनी भूमिका सुनिश्चित करें, जिससे कि मीडिया क्षेत्र की गरिमा भी बनी रहे और लोकतंत्र का भी सही विकास हो सके। दीन दयाल उपाध्याय ने सार्वजनिक जीवन के प्रति सचेत, सुरूचिपूर्ण एवं संस्कारक्षम पत्रकारिता को अपने से संबद्ध कार्यकर्ताओं व समाचार पत्रों के माध्यम से विकसित करने का पर्यत्न किया। दीन दयाल उपाध्याय का पत्रकारीय चिंतन शाश्वत् राष्ट्रवादी और भारतीय जीवन मूल्यों की विचारधारा से जुड़ता है। पत्रकारिता के आधार पर उन्होंने राष्ट्रभाव को समझने तथा भारतीय अस्मिता को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। वे राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार कर उनका समाधान अपने आलेखों में प्रकाशित करते थे। समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए पत्रकारिता को दीन दयाल उपाध्याय ने एक शस्त्र के रूप में स्वीकार किया। अपनी लेखनी के माध्यम से उन्होंने सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को परिभाषित किया। मानव जीवन का लक्ष्य भौतिक मात्र नहीं है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का विचार भी ध्यान रखना चाहिए। सभी कार्य 'धर्म' से प्रेरित होने चाहिए। अर्थात लाभ की कामना लेकिन सभी का शुभ होना अनिवार्य है। यदि समाज का हित हो रहा हो तो परिवार का हित छोड़ देना चाहिए। देश का हित हो रहा हो तो समाज का हित छोड़ देना चाहिए। पत्रकारिता में भी इसी समूल भावना से कार्य करना चाहिए। राष्ट्रवाद के अंतर्गत राष्ट्रप्रेम का यही विचार प्रत्येक पत्रकार में होना चाहिए।

संधर्व सूची

1. एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीन दयाल उपाध्याय, लेखक, अमरजीत सिंह
2. 'अर्थ अंक' पर दीनदयाल जी की सम्मति; पांच्चजन्य, 28 दिसंबर, 1953
3. डॉ. महेश चंद्र शर्मा, भेटवार्ता भानुप्रताप शुक्ल, दिल्ली, 27 जनबरी 1985 साक्षात्कार पंजिका, पृ 11
4. दीन दयाल उपाध्याय, कर्तृत्व एवं विचार, डा महेश चंद्र शर्मा, प्रभात प्रकाशन, पृ 270